



AXIS INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH (AIJMR)

Peer review journal As per UGC 2025 Standard Guidelines

शासकीय विद्यालयों में संस्थागत निष्पक्षता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा: शिक्षक स्वास्थ्य के संदर्भ में एक वैचारिक विश्लेषण (Institutional Fairness and Psychological Safety in Government Schools: A Conceptual Analysis in the Context of Teacher Health)

¹सनत वर्मा, ²डॉ. पूर्णिमा तिवारी (सहायक प्राध्यापक)

¹ शोधार्थी, ²शोध निर्देशक

¹⁻² मनोविज्ञान विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग

सारांश

शासकीय विद्यालयों में शिक्षक के कार्य-अनुभव को केवल कार्यभार या व्यक्तिगत तनाव-सहन क्षमता के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। विद्यालय में निर्णय किस प्रकार लिए जाते हैं, कार्य और दायित्व कैसे बाँटे जाते हैं, शिक्षक की बात सुनी जाती है या नहीं, तथा असहमति व्यक्त करने पर वह कितना सुरक्षित महसूस करता है—ये संस्थागत अनुभव शिक्षक के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य और पेशेवर व्यवहार से संबंधित हो सकते हैं। प्रस्तुत लेख का उद्देश्य संस्थागत निष्पक्षता, नेतृत्व-व्यवहार, सहभागिता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा की अवधारणाओं का शिक्षक स्वास्थ्य के संदर्भ में वैचारिक विश्लेषण करना है। लेख वैचारिक-समीक्षात्मक प्रकृति का है। इसमें कोई प्राथमिक सर्वेक्षण, साक्षात्कार या सांख्यिकीय परीक्षण नहीं किया गया है। उपलब्ध साहित्य में शिक्षक-कल्याण को बहुआयामी और संदर्भ-निर्भर अवधारणा माना गया है, जबकि विद्यालयी नेतृत्व से जुड़े निष्कर्षों में कारणात्मक दावों के प्रति सावधानी आवश्यक बताई गई है। इस आधार पर लेख एक वैचारिक ढाँचा प्रस्तुत करता है जिसमें संस्थागत निष्पक्षता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा संभावित मध्यवर्ती प्रक्रियाओं के रूप में कार्य कर सकती हैं। लेख के अंत में विद्यालय-स्तरीय व्यवहार, प्रशासनिक प्रक्रिया और भविष्य के अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए सुझाव दिए गए हैं।

मुख्य शब्द : संस्थागत निष्पक्षता, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, विद्यालयी नेतृत्व, शिक्षक स्वास्थ्य, सहभागिता, शासकीय विद्यालय

ARTICLE HISTORY

Received: 18 July 2026, Accepted: 22 July 2026, Published: 20 August 2026

1. प्रस्तावना :-

शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं है। कक्षा-शिक्षण, विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं का उत्तर, अभिभावकों से संवाद, अभिलेखीय कार्य, मूल्यांकन, प्रशिक्षण तथा प्रशासनिक निर्देशकृद्न सभी के बीच शिक्षक को पेशेवर निर्णय लेने पड़ते हैं। इन दायित्वों का अनुभव विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण से अलग करके नहीं समझा जा सकता। एक ही प्रकार के कार्यभार का अनुभव दो विद्यालयों में अलग हो सकता है, यदि एक स्थान पर संवाद, सहयोग और निर्णय-प्रक्रिया पारदर्शी हो, जबकि दूसरे स्थान पर निर्देश अस्पष्ट हों या निर्णयों में असमानता अनुभव की जाए।

शिक्षक-कल्याण पर हाल के साहित्य में अवधारणात्मक विविधता और मापन संबंधी असंगतियों की ओर ध्यान दिलाया गया है। ळह्यउग्र – ळमदवअंतजए ळपअमत – ज्तवइंज और त्वेमससख – त्तवद (2025) की व्यवस्थित समीक्षा ने शिक्षक-कल्याण के अध्ययन में विभिन्न अवधारणात्मक और पद्धतिगत दृष्टिकोणों की उपस्थिति रेखांकित की। ळजनताए ळपहमसूवतजी और ळनपतमे (2024) ने प्राथमिक शिक्षकों के कल्याण को बहुआयामी रूप से समझने की आवश्यकता पर बल दिया। इससे संकेत मिलता है कि शिक्षक स्वास्थ्य का अध्ययन केवल व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक गुणों तक सीमित न रहकर कार्यस्थल की संस्थागत प्रक्रियाओं को भी देखे।

यह लेख संस्थागत निष्पक्षता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा को केंद्र में रखता है। संस्थागत निष्पक्षता से आशय निर्णयों, प्रक्रियाओं, संसाधन-वितरण और पारस्परिक व्यवहार में न्यायसंगतता की अनुभूति से है। मनोवैज्ञानिक सुरक्षा से आशय ऐसी कार्यस्थलीय अनुभूति से है जिसमें व्यक्ति प्रश्न पूछने, कठिनाई बताने, गलती से सीखने या सम्मानपूर्वक असहमति व्यक्त करने पर अपमान अथवा प्रतिशोध की आशंका अपेक्षाकृत कम महसूस करे।

2. समस्या का प्रतिपादन और अध्ययन की आवश्यकता :-

शिक्षक-तनाव पर सामान्य चर्चा प्रायः कार्यभार, समय-दबाव, संसाधनों की कमी और व्यक्तिगत सामना-रणनीतियों पर केंद्रित रहती है। ये कारक महत्वपूर्ण हैं, पर यह भी समझना आवश्यक है कि संस्थागत निर्णयों की प्रक्रिया शिक्षक के अनुभव को कैसे आकार देती है। उदाहरण के लिए, समान कार्य-वितरण के नियम यदि पारदर्शी हों और शिक्षक को कारण समझाए जाएँ, तो निर्णय स्वीकार करने की संभावना भिन्न हो सकती है। इसके विपरीत, अस्पष्ट या असंगत प्रक्रिया अविश्वास और असुरक्षा की अनुभूति बढ़ा सकती है। यह सैद्धांतिक संभावना है, इस लेख में प्रत्यक्ष रूप से जाँचा गया परिणाम नहीं।

विद्यालयी नेतृत्व और शिक्षक-कल्याण के संबंध में साहित्य उपलब्ध है, लेकिन उपलब्ध समीक्षाएँ सावधान करती हैं कि कई निष्कर्ष सहसंबंधात्मक हैं और उनसे सीधे कारण-परिणाम का निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए। जंतमितलमं और ठमससपइं (2025) के गुणात्मक मेटा-संश्लेषण में शिक्षक स्वायत्तता, भरोसेमंद संबंध, सहयोग और कल्याण-केंद्रित नेतृत्व जैसे विषय उभरे। इस पृष्ठभूमि में संस्थागत निष्पक्षता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा को साथ रखकर वैचारिक विश्लेषण उपयोगी हो सकता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य : -

1. शासकीय विद्यालयों में संस्थागत निष्पक्षता की अवधारणा को शिक्षक के कार्य-अनुभव के संदर्भ में स्पष्ट करना।
2. विद्यालयी नेतृत्व, संवाद, सहभागिता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के संभावित संबंधों का विश्लेषण करना।
3. शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य, पेशेवर विश्वास और सहयोगात्मक व्यवहार के संदर्भ में संस्थागत प्रक्रियाओं की भूमिका पर वैचारिक चर्चा करना।
4. विद्यालय प्रशासन और भविष्य के अनुसंधान के लिए व्यवहार्य सुझाव प्रस्तुत करना।

4. अध्ययन की पद्धति और सीमा : -

यह लेख वैचारिक-समीक्षात्मक अध्ययन है। इसमें शिक्षक या विद्यालयों से प्राथमिक आँकड़े एकत्र नहीं किए गए, न ही किसी प्रश्नावली या सांख्यिकीय तकनीक का प्रयोग किया गया है। चर्चा के लिए शिक्षक-कल्याण, विद्यालयी नेतृत्व,

मनोवैज्ञानिक सुरक्षा तथा संस्थागत वातावरण पर उपलब्ध चुनिंदा समीक्षात्मक और सैद्धांतिक साहित्य का उपयोग किया गया है। इसे व्यवस्थित साहित्य-समीक्षा (लेजमंडजपब तमअपमू) नहीं कहा जा रहा है, क्योंकि डेटाबेस, खोज-शब्द, समावेशन – बहिष्करण मानदंड और चयन-प्रवाह का पूर्ण पुनरुत्पाद्य प्रोटोकॉल यहाँ लागू नहीं किया गया। अतः प्रस्तुत निष्कर्ष वैचारिक प्रस्ताव हैं, अनुभवजन्य निष्कर्ष नहीं।

सीमा यह भी है कि उद्धृत अधिकांश अंतरराष्ट्रीय साहित्य अलग-अलग शिक्षा-प्रणालियों से आता है। भारतीय, विशेषकर छत्तीसगढ़ के शासकीय विद्यालयों में प्रशासनिक व्यवस्था, स्थानीय संदर्भ, संसाधन और नीति-कार्यान्वयन भिन्न हो सकते हैं। इसलिए प्रस्तुत ढाँचे को स्थानीय प्रमाणों से जाँचना आवश्यक होगा।

5. प्रमुख अवधारणाएँ : –

5.1 संस्थागत निष्पक्षता : –

संस्थागत निष्पक्षता को तीन परस्पर संबंधित स्तरों पर समझा जा सकता है— (क) वितरणात्मक निष्पक्षता—कार्य, समय, संसाधन, प्रशिक्षण और अवसरों का न्यायसंगत वितरण (ख) प्रक्रियात्मक निष्पक्षता—निर्णय लेने के नियमों की पारदर्शिता, निरंतरता और समीक्षा की उपलब्धता तथा (ग) पारस्परिक निष्पक्षता—निर्णय लागू करते समय सम्मानजनक व्यवहार, कारणों की स्पष्ट व्याख्या और शिक्षक की गरिमा का ध्यान। ये इस लेख में विश्लेषण के लिए प्रयुक्त अवधारणात्मक श्रेणियाँ हैं। इनके स्थानीय मापन के लिए अलग उपकरण और वैधता-जाँच आवश्यक होगी।

5.2 विद्यालयी नेतृत्व और संवाद : –

विद्यालयी नेतृत्व केवल आदेश देने या निरीक्षण करने की प्रक्रिया नहीं है। इसमें शैक्षणिक दिशा, संसाधन-सहायता, स्पष्ट अपेक्षाएँ, शिक्षक की व्यावसायिक स्वायत्तता, प्रतिक्रिया देने का अवसर और कठिन परिस्थितियों में सहयोग शामिल हो सकते हैं। ज्ञातमितलमं और ठमससपइ\$ (2025) की समीक्षा में स्वायत्तता, भरोसेमंद संबंध, सहयोग, व्यावसायिक विकास और कल्याण को विद्यालयी नेतृत्व से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों के रूप में पहचाना गया। फिर भी किसी एक नेतृत्व शैली को हर विद्यालय और परिस्थिति में प्रभावी मानना उचित नहीं होगा।

5.3 मनोवैज्ञानिक सुरक्षा : –

मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का विचार कार्यसमूह में यह विश्वास दर्शाता है कि प्रश्न पूछना, अनिश्चितता स्वीकार करना, गलती की सूचना देना या नया विचार प्रस्तुत करना सामाजिक दंड का कारण नहीं बनेगा। विद्यालयी संदर्भ में यह विद्यार्थियों की सीखने-संबंधी कठिनाइयों, कक्षा-प्रबंधन की समस्याओं, पाठ्यक्रम-संबंधी चुनौतियों और प्रशासनिक अस्पष्टताओं पर खुली बातचीत को संभव बना सकती है। इसका अर्थ जवाबदेही समाप्त करना नहीं, बल्कि ऐसा वातावरण बनाना है जहाँ समस्याएँ छिपाने के बजाय समय पर सामने आ सकें।

5.4 शिक्षक स्वास्थ्य और पेशेवर कार्य-अनुभव : –

इस लेख में शिक्षक स्वास्थ्य का अर्थ किसी चिकित्सकीय निदान से नहीं है। चर्चा मानसिक तनाव, भावनात्मक थकान, काम के प्रति संतुष्टि, पेशेवर आत्मविश्वास, सहयोग की अनुभूति और कार्य में संलग्नता जैसे संभावित संकेतकों तक सीमित है। वास्तविक अध्ययन में इन संकेतकों को अलग-अलग मापना चाहिए इन्हें एक ही अस्पष्ट स्कोर में समेटना उचित नहीं होगा।

6. साहित्य का आलोचनात्मक अवलोकन : –

व्जनता मज 'स. (2024) की व्यवस्थित समीक्षा में प्राथमिक शिक्षकों के कल्याण पर प्रकाशित अध्ययनों का विश्लेषण किया गया और शिक्षक-कल्याण की बहुआयामी समझ की आवश्यकता सामने आई। यह कार्य इस बात का समर्थन करता है कि कल्याण को केवल तनाव की अनुपस्थिति मानना पर्याप्त नहीं है।

ज्ञांतमितलमं और ठमससपइं\$ (2025) ने 29 गुणात्मक अध्ययनों के मेटा-संश्लेषण के माध्यम से शिक्षक स्वायत्तता और एजेंसी, विश्वासपूर्ण संबंध, सहयोगात्मक वातावरण, व्यावसायिक विकास और कल्याण को नीति एवं निर्णयों में समाहित करने जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। यह समीक्षा वर्तमान लेख के नेतृत्व और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा वाले दृष्टिकोण के लिए प्रासंगिक है, हालांकि इसका परिणाम भारतीय शासकीय विद्यालयों पर सीधे लागू मान लेना उचित नहीं होगा।

समग्र रूप से साहित्य संस्थागत वातावरण की प्रासंगिकता का समर्थन करता है, पर शासकीय विद्यालयों में निष्पक्षता, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और शिक्षक स्वास्थ्य के बीच विशिष्ट संबंधों को स्थानीय स्तर पर जाँचना आवश्यक है। यह लेख इसी संभावित शोध-अंतर को स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

इस लेख के आधार पर एक परीक्षण योग्य वैचारिक ढाँचा प्रस्तावित किया जा सकता है: —

संस्थागत प्रक्रियाएँ	संभावित मध्यवर्ती अनुभव	संभावित शिक्षक-संबंधी परिणाम
पारदर्शी कार्य-वितरण और स्पष्ट नियम	निष्पक्षता एवं पूर्वानुमेयता की अनुभूति	कम अनिश्चितताय बेहतर कार्य-अनुभव
सम्मानजनक संवाद और सुनवाई	मनोवैज्ञानिक सुरक्षा एवं विश्वास	समस्या बताने और सहयोग की अधिक संभावना
निर्णय-प्रक्रिया में सहभागिता	स्वायत्तता और पेशेवर एजेंसी	पेशेवर आत्मविश्वास और संलग्नता
समय पर सहायता और न्यायसंगत प्रतिक्रिया	समर्थन और संगठनात्मक जुड़ाव	तनावपूर्ण स्थितियों से निपटने के बेहतर अवसर

8. चर्चा : -

संस्थागत निष्पक्षता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का संबंध शिक्षक के दैनिक कार्य—अनुभव को समझने के लिए उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है। जब कार्य—वितरण के मानदंड स्पष्ट हों, निर्णयों के कारण बताए जाएँ और शिक्षक को सम्मानपूर्वक अपनी बात रखने का अवसर मिले, तो कार्यस्थल के प्रति भरोसा बढ़ने की संभावना हो सकती है। इसके विपरीत, अस्पष्ट निर्देश, बदलते मानदंड, पक्षपात की अनुभूति या प्रश्न उठाने पर अपमान का डर संवाद को सीमित कर सकता है। ये संभावित प्रक्रियाएँ हैं, जिन्हें स्थानीय शोध से जाँचना होगा।

मनोवैज्ञानिक सुरक्षा को केवल प्रधानाचार्य के व्यक्तिगत व्यवहार तक सीमित करना पर्याप्त नहीं होगा। उच्चतर प्रशासनिक निर्देश, निरीक्षण व्यवस्था, समय-सीमा, संसाधन उपलब्धता, शिकायत-निवारण की प्रक्रिया और विद्यालय की सामूहिक संस्कृति मिलकर शिक्षक के अनुभव को आकार दे सकते हैं। इसलिए सुधार का केंद्र केवल शिक्षक को अधिक सहनशील बनाना नहीं, बल्कि उन संस्थागत प्रक्रियाओं को भी देखना होना चाहिए जो अनावश्यक अनिश्चितता या मौन को बढ़ावा देती हैं।

निष्पक्षता का अर्थ सभी शिक्षकों को हर परिस्थिति में बिल्कुल समान कार्य देना नहीं है। न्यायसंगत प्रक्रिया में भूमिका, कार्य-समय, विशेष जिम्मेदारियों, उपलब्ध संसाधनों और वैध आवश्यकताओं पर विचार किया जा सकता है। इसी प्रकार मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का अर्थ कार्य-मानकों से छूट नहीं, बल्कि समस्याओं पर खुलकर बात करने और सुधार के अवसर उपलब्ध कराने से है।

9. व्यावहारिक सुझाव : –

1. कार्य-वितरण, अतिरिक्त दायित्व, प्रशिक्षण और अन्य अवसरों के लिए लिखित एवं स्पष्ट मानदंड उपलब्ध कराए जाएँ।
2. विद्यालयी बैठकों में शिक्षकों को केवल सूचना प्राप्तकर्ता नहीं, बल्कि शैक्षणिक निर्णयों में सार्थक भागीदार बनाया जाए।
3. कठिनाइयों और असहमति पर चर्चा के लिए सम्मानजनक संवाद-प्रक्रिया विकसित की जाएय समस्या उठाने वाले शिक्षक को कलंकित न किया जाए।
4. प्रशासनिक निर्देशों में जहाँ संभव हो, उद्देश्य, समय-सीमा, प्राथमिकता और अपेक्षित परिणाम स्पष्ट लिखे जाएँ।
5. शिकायत या विवाद की स्थिति में निष्पक्ष सुनवाई, गोपनीयता और अपील की स्पष्ट प्रक्रिया रखी जाए।
6. प्रधानाचार्यों और शैक्षणिक नेतृत्वकर्ताओं के प्रशिक्षण में संवाद, संघर्ष-समाधान, निष्पक्ष निर्णय और शिक्षक-कल्याण को शामिल किया जाए।
7. विद्यालय स्तर पर समय-समय पर अनाम प्रतिक्रिया ली जा सकती है, लेकिन उसका उपयोग दंडात्मक निगरानी के बजाय सुधार के लिए किया जाए।
8. इन उपायों के प्रभाव का दावा करने से पहले पायलट, प्रक्रिया-मूल्यांकन और उपयुक्त नैतिक सुरक्षा के साथ अध्ययन किया जाए।

10. भविष्य के अनुसंधान की दिशा : –

भविष्य में छत्तीसगढ़ के शासकीय विद्यालयों में मिश्रित-पद्धति अध्ययन उपयोगी हो सकता है। पहले चरण में संस्थागत निष्पक्षता, मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, कार्यस्थलीय समर्थन और शिक्षक स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त मापन-उपकरणों की भाषा-सांस्कृतिक उपयुक्तता जाँची जा सकती है। दूसरे चरण में विभिन्न जिलों, ग्रामीण-शहरी विद्यालयों, अनुभव-स्तरों और प्रशासनिक भूमिकाओं के आधार पर तुलना की जा सकती है। तीसरे चरण में साक्षात्कार या फोकस समूहों से यह समझा जा सकता है कि शिक्षक किन प्रक्रियाओं को निष्पक्ष या असुरक्षित मानते हैं।

अनुसंधान में स्वैच्छिक सहभागिता, गोपनीयता, सूचित सहमति और किसी भी प्रकार के प्रशासनिक प्रतिशोध से सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिए। यदि डेटा एकत्र किया जाए, तो नमूना-चयन, उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैधता, विश्लेषण-प्रक्रिया और नैतिक स्वीकृति का विवरण प्रकाशित लेख में स्पष्ट देना आवश्यक होगा।

11. अध्ययन की सीमाएँ : –

यह लेख वैचारिक-समीक्षात्मक है और इसमें प्राथमिक आँकड़े नहीं हैं। इसलिए इससे शिक्षक स्वास्थ्य पर संस्थागत निष्पक्षता या मनोवैज्ञानिक सुरक्षा के कारणात्मक प्रभाव का निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। प्रयुक्त साहित्य का चयन पूर्ण व्यवस्थित खोज-प्रोटोकॉल के आधार पर नहीं हुआ है। अतः इसे सभी उपलब्ध अध्ययनों का संपूर्ण प्रतिनिधित्व नहीं माना जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के निष्कर्ष भारतीय शासकीय विद्यालयों के संदर्भ में प्रत्यक्ष रूप से सामान्यीकृत नहीं किए जा सकते।

12. निष्कर्ष : –

शासकीय विद्यालयों में शिक्षक स्वास्थ्य को समझने के लिए व्यक्तिगत तनाव-प्रबंधन के साथ-साथ संस्थागत प्रक्रियाओं पर भी ध्यान देना आवश्यक है। निर्णयों की पारदर्शिता, कार्य-वितरण की निष्पक्षता, सम्मानजनक संवाद, शिक्षक की सहभागिता और मनोवैज्ञानिक सुरक्षा ऐसे आयाम हैं जो शिक्षक के कार्य-अनुभव से संबंधित हो सकते हैं। उपलब्ध साहित्य इन विषयों की प्रासंगिकता दिखाता है, लेकिन संबंधों की प्रकृति और प्रभाव की दिशा को लेकर सावधानी आवश्यक है। प्रस्तुत वैचारिक ढाँचा भविष्य के स्थानीय अनुसंधान के लिए परिकल्पनाएँ और प्रशासनिक सुधार के संभावित क्षेत्र सुझाता है। इसे अनुभवजन्य निष्कर्ष या प्रमाणित हस्तक्षेप का विकल्प नहीं समझना चाहिए।

संदर्भ सूची : –

1. Gámez-Genovart, M., Oliver-Trobat, M. F., & Rosselló-Ramon, M. R. (2025). Research on teacher well-being: A systematic review. *Teaching and Teacher Education*, 168, Article 105264. <https://doi.org/10.1016/j.tate.2025.105264>
2. Ivarsson-Keng, N., et al. (2024, online publication; verify final issue details before submission). A structured review of the potential role of school leaders in making teaching more attractive. *Educational Review*. <https://doi.org/10.1080/00131911.2024.2392565>
3. Karaferyea, F., & Bellibaş, M. Ş. (2025). Key school leadership practices to enhance teacher wellbeing: A meta-synthesis of qualitative evidence. *Research Papers in Education*, 40(5), 684–716. <https://doi.org/10.1080/02671522.2025.2475496>.



शोध निर्देशक	शोधार्थी
डॉ. पूर्णिमा तिवारी	सनत वर्मा
सहायक प्राध्यापक	
मनोविज्ञान विभाग,	
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग	